दिनांक18/08/2020

कविलोचनिका (प्रथमो भागः)
बालीविच्छित्तिः

श्लोक2..माञ्जिष्ठकञ्चुकवृत्तं जरठं बहिर्यद् अभ्यन्तरे च घनसारतुषारशुभ्रम् ।आस्वाद्य मांगिसफलं मसृणं च मिष्टं, बाल्यां न किंचिदपि भाति विषादयोग्यम्।।। हिन्दी व्याख्या- जो बाहर से मन्जीठी रंग के कंचुकअर्थात् कठोर आवरण से ढका हुआ अंदर से कपूर के समान श्वेत है अर्थात् पाले की बूंदों के समान उज्जवल है ।स्वाद में बादाम और अखरोट के समान मीठा है। बाली द्वीप में कुछ भी असुखकर नहीं हैं ।